Ist P.

प्रचीन काल से पूर्व का संगीत -

उ०- संगीत और मानव का अन्योनाश्रय संबंध -

यह प्राकृतिक उपादानो से उपलब्ध मानव की अत्यंत ही कलात्मक अनुभुती का परिणाम है मनुष्य का पादुर्भाव कब हुआ यह तय करना मुश्किल है फिर भी डार्विन के सिद्धांत के अनुसार मानव के पूर्वज बंदर थे। लाखो वर्ष संघर्ष करने के बाद मनुष्य का स्वरूप बना। जिस समय मानव पशुओं की भांती झुंड में रहता था। वर्षा, आंधी, हिंसक जानवरों से भयभीत था। जिस कारण इसे झुंड में रहना अनिवार्य था समुह में ये रहते थे। ताकि हिंसक पशुओं से अपनी रक्षा कर सके। आदि मानव को भाषा का ज्ञान नही था। संकेतो के आधार पर ये अपनी बातों को पुरा करते थे। उस काल में इच्छित वस्तु की प्राप्ति होने पर या जानवरों के शिकार करने पर आदिमानव का खुशी मे कुदना फांदना, चील्लाना, हो हो करके शोर मचाना यही तो आदि संगीत था।

प्राचीन काल से पूर्व अगर पृथ्वी पर मानव का अस्तित्व था तो संगीत भी था। क्योंकि संगीत मानव के अतिरिक्त कोई पदार्थ नही है। यह सीधे या किसी वस्तु के आधार पर मानव के द्वारा ही अभीव्यक्त होती है।

लोचन

कवि लोचन मिथिला के रहने वाले थे। ये उजान गाँव के श्रोत्रिय ब्राह्मण थे। इनकी लिखित राग तरंगिनी मध्यकालिन भारतीय संगीत को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया है। आचार्य बृहस्पति ने लोचन का काल 14वीं ~~शताब्दि~~ शताब्दी निर्धारित किया है। लोचन स्वयं गायक थे। अथवा संगीत शास्त्री थे, इसकी प्रमाणित जानकारी उपलब्ध नही है। परन्तु संगीत सम्बंधित विवेचनाओं से इन्हे संगीत शास्त्री ही अधिक माना जा सकता है। लोचन ने राग रागिनी का उल्लेख किया है। तथा देशी संगीत की चर्चा की है। इन्होने मुकाम शब्द का उल्लेख किया है। जिसे आचार्य बृहस्पति ने संस्थान कहा है। आचार्य बृहस्पति के अनुसार मुकाम संस्थान अथवा मेल पर्यायवाची है। भारतीय संगीत पर इरानी संगीत के प्रभाव को सर्वप्रथम लोचन के राग तरंगनी में ही स्पष्ट हुआ है लोचन संगीत के ऐसे आचार्य हैं जिन्होने ही स्वरों के कोमल नाम बनाये हैं अर्थात अपने मूल स्थान से पूर्व अवस्थित होने वाले विकसित स्वरों को लोचन ने ही कोमल रिषभ, कोमल गांधार आदि नाम बताये।

Scanned with CamScanner